शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हरिशंकर आदेश की कविता 'आये थे कबीर' का संगणकसाधित भाषिकी विश्लेषण

श्रीमती वंदना पाटील (शोधार्थी), सुश्री.वर्षा कुलकर्णी (शोधार्थी)
डॉ.पद्मा पाटील (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष)
हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर, महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

आज का युग संगणक का युग है। कोई भी क्षेत्र संगणक से दूर नहीं रहा है उसी प्रकार भाषा भी संगणक से अछूती नहीं रही है। हम कविता का अध्ययन सिर्फ कथ्य की दृष्टि से न करते हुए उनका व्याकरणिक रूपदेखें तो कवि की भाषा, शब्द सामर्थ्य व्याकरणिक पदबंध उसमें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि का ज्ञान होता है। कविता का व्याकरणिक दृष्टि से अध्ययन भाषा विज्ञान के अंतर्गत आता है वह काम बहुत ही कठिन होता है। परंतु आज वही काम संगणक के माध्यम से करना आसान हो गया है। अत: किसी भी साहित्यिक कृति का अध्ययन अभिकलनात्मक भाषा विज्ञान शाखा के अंतर्गत करने से साहित्यकार की रचना का शब्द निर्माण से पद रचना तक का अध्ययन किया जाता है। आज संगणक क्षेत्र में विविध सॉफ्टवेअर के माध्यम से डाटाबेस तैयार करके भाषा का अध्ययन करना आसान हो गया है। गद्य के वाक्य विश्लेषण के अनुसार पद्य में पद का विश्लेषणकर्ता कर्म, क्रिया के अनुसार कर नहीं सकते हैं। उसमें पद रचना के अनुसार विश्लेषण करना पड़ता है। इस विश्लेषण केअनुसार पद को संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया में विश्लेषित करके डाटाबेस तैयार किया गया और कवि की भाषा तथा शब्द सामर्थ्य का अध्ययन किया गया। इन पदों में कवि ने कही भी निरर्थक तथा अनावश्यक शब्दों का प्रयोग नही किया है। कम शब्दों में अधिक से अधिक विचारों को व्यक्त किया है। जिससे 'गागर में सागर' भरने की उनकी बौद्धिक क्षमता दिखाई देती है।

मूल शब्द - *कबीर, हरिशंकर आदेश, भाषा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, संगणकसाधित, अभिकलन, व्याकरण, पदबंध, वृक्षसंलग्न प्रणाली, डाटाबेस*

भूमिका

महाकवि हरिशंकर आदेश एक प्रवासी भारतीय साहित्यकार हैं। लगभग चार-पाँच दशकों से विदेश में रहकर भी उनमें अपने देश के प्रति आदर और आस्था दिखाई देती है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से देश , संस्कृति, साहित्य तथा महान व्यक्तिओं की महानता को चित्रित करके विदेश में पहुँचाने का प्रयास किया है।

कवि हरिशंकर आदेश द्वारा लिखित 'लहू और सिंदूर' कृति में संकलित कविताएँ 1961-62 ई. के दरमियान लिखी गयी हैं। यह कविता संग्रह 1972 ई. में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह की कविताएँ वीर , हास्य, भक्ति, उत्साह रस से परिपूर्ण हैं। इसी संग्रह में से एक कविता है 'आये थे कबीर '। इस कविता में कबीर ने जो समाज सुधार के लिए अपने विचार अभिव्यक्त

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

किए थे उन्हीं विचारों को लेकर कबीर के विचारों को तथा कबीर की महानता को फिर से समाज के सामने प्रस्तुत करने का कार्य आदेश जी ने किया है।

आज संगणक के माध्यम से कविता का अध्ययन करना आसान हो गया है। संगणन / अभिकलन अर्थात संगणक/अभिकलित्र संकल्पनाएँ 21वीं शती में अधिक उपयुक्त होने लगी हैं। भाषा का अध्ययन/ विश्लेषण अभिकलित्र यानि संगणक के आधार पर करना आज के युग की अवश्यकता बनी है। कोश निर्माण कार्य , भाषा का व्याकरणिक विश्लेषण, मशीनी अनुवाद जैसे भाषा से जुड़े शोधकार्य अभिकलनात्मक/ संगणक साधित भाषिक अनुसंधान में आ जाता है। प्रस्तुत शोध आलेख इसके अंतर्गत रहकर संपन्न किया है। प्राकृतिक भाषा संसाधन के माध्यम में लिखित या मौखिक भाषा का संगणक की सहायता से अध्ययन करना आज संभव हो गया है। कवि की समग्र रचनाओं का कार्पोरा तैयार कर उसके माध्यम से कविता का भाषिक विश्लेषण कर दिया जाता है। संगणक साधित डाटाबेस तैयार करते समय उस शब्द का व्याकरणिक रूप और उसका अर्थविश्लेषण का डाटा तैयार कर दिया गया तब किसी भी व्यक्तिके लिए कविता का अध्ययन करना कठिन नहीं रह जाता । 'आये थे कबीर ' कविता का अभिकलनात्मक भाषा विज्ञान की दृष्टि से अध्ययन करते समय पदरचना का व्याकरणिक विश्लेषण करने पर साहित्यकार की रचना शैली स्पष्ट होती है। वृक्ष संलग्न प्रणाली के अंतर्गत वाक्य को प्रारंभ में दो भागो में विभाजित करते हैं संज्ञा पदबंध और क्रिया पदबंध। बाद में उसे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, परसर्ग आदि में विश्लेषित करते हैं। वाक्य विश्लेषण के अनुसार पद्य में विश्लेषणकर्ता , कर्म, क्रिया के अनुसार कर नहीं सकते हैं। लेकिन इससे अर्थ में कोई भी बाधा नहीं पहुँचती। उसमें पद के अनुसार विश्लेषण करना पड़ता है। इस विश्लेषण से डाटाबेस तैयार किया गया और कवि के शब्द सामर्थ्य का अध्ययन किया गया। इन पदों में कवि ने कही भी निरर्थक तथा अनावश्यक शब्दों का प्रयोग नही किया है। कम शब्दों में अधिक से अधिक विचारों को व्यकत किया है। जिससे 'गागर में सागर' भरने की उनकी बौद्धिक क्षमता दिखाई देती है।

कवि हरिशंकर आदेश की कविता 'आये थे कबीर'

का संगणकसाधित भाषिकी विश्लेषण

हिंदी साहित्य इतिहास में कबीर एक महान साहित्यकार थे। वे अनपढ़ थे, परंतु उनके विचार श्रेष्ठ थे। उन्होंने समाज में जो जाँति-पाति, धर्म, रूढी, परम्पराओं आदि का जो आडंबर फैला था उससे समाज को बाहर निकालने का प्रयास किया है। कबीर अपने पदों में बुरी बातों पर तीखा व्यंग्य करते हैं। इन बातों से समाज को होने वाला नुकसान भी बताते हैं। जाँति -पाति, धर्म, रूढी, परम्पराओं आदि के विरोध में समाज में स्पष्टता से बोलना असंभव था। ऐसे समय में कबीर समाज में खुलेआम अपने व्यंग्य से भरे पद गाते थे और समाज को जागृत करने का प्रयास करते थे। ऐसे महान समाज सुधारक के विचारों से प्रेरित होकर कवि आदेश ने कबीर को अपनी कविता का केंद्र बनाया है।

कबीर अपने पदों में जाँति-पांति के बारें में कहते हैं कि 'जाँति-पांति पूछो नहीं कोई हरि -को-भजे सो हरि का होई ' इस विचार को दूसरे शब्दों में आदेश जी कहते हैं कि जाँति-पांति का अंधकार जो समाज में फैला था उसे दूर कर प्रकाश

फैलाने के लिए मानव में समता की भावना बढ़ाने के लिए ही कबीर ने जन्म लिया था।
अपने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए कबीर ने उलाहना सही किन्तु समाज सुधार के अपने ध्येय को अखंडित आगे बढ़ते रहे।
भटकों को राह दिखने को दुनिया में आये थे कबीर
(सर्वनाम परसर्ग संज्ञा क्रिया परसर्ग संज्ञा परसर्ग क्रिया क्रिया संज्ञा)
जब जाति - पांति का अंधियारा, खाये जाता था जग सारा
(क्रिया विशेषण संज्ञा संज्ञा परसर्ग संज्ञा क्रिया क्रिया क्रिया संज्ञा विशेषण)
डर- डर कर जिससे सिहर रहा था, ज्ञान दीप का उजियारा
(विशेषण परसर्ग सर्वनाम संज्ञा क्रिया क्रिया संज्ञा संज्ञा परसर्ग संज्ञा)
फिर बुझती ज्योति जलाने को सम -भाव सभी में लाने को
(क्रिया विशेषण क्रिया संज्ञा क्रिया परसर्ग संज्ञा विशेषण परसर्ग क्रिया परसर्ग)
जन-जीवन सुखी बनाने को , दुनियां में आये थे कबीर
(संज्ञा विशेषण क्रिया परसर्ग संज्ञा परसर्ग क्रिया क्रिया संज्ञा)
इन पंक्तियों का प्राकृतिक भाषा संसाधन के अंतर्गत संगणकसाधित अध्ययन (WingoradTerry,1973) करते समय व्याकरणिक दृष्टि से इन पदों का विश्लेषण करके उन्हें संज्ञा , सर्वनाम, विशेषण, परसर्ग, क्रिया आदि में विश्लेषण करके डाटा तैयार किया गया (भोलानाथ तिवारी, 2000) वह इस प्रकार-
संज्ञा के रूप में - राह, दुनिया, कबीर, जाति-पांति, अधियारा, जग,सिहर, ज्ञानदीप, उजियारा, ज्योति, भाव, जनजीवन, शब्दों का प्रयोग किया गया है।
सर्वनाम के रूप में - भटकों, जिससे,शब्दों को प्रयुक्त किया है।
क्रियाविशेषण के रूप में - जब फिर, शब्दों का प्रयोग किया है।
विशेषण के रूप में - सारा, डर- डर, सम, सभी, सुखी, शब्दों का प्रयोग किया है।
परसर्ग के रूप में - को, में, का, कर,विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग किया है।
क्रिया के रूप में - दिखाने, आये थे, खाये, जाता था, रहा, बुझती, जलाने, लाने, बनाने,
इन शब्दों का उपयोग किया है।
कबीर अपने पदों में धर्म के बारें में भी विचार व्यक्त करते हैं। अपने -अपने धर्म को श्रेष्ठ मानने वाले मौलवी , शास्त्री, मुल्ला,पंडित, आदि के व्यवहार पर करारा व्यंग्य करते हैं और धर्म के नाम पर झगड़े करने के बदले सभी लोग मानवता धर्म को मानकर सभी में प्रेम की भावना फैलाए तो समाज में शांति निर्माण होगी। इतने वर्षों पहले इन महान विचारों को समाज के सामने रखने वाले कबीर के तत्वज्ञान की वर्तमान के अराजकता भरे वातावरण में आवश्यकता महसूस होती है। इसीलिए कबीर के विचार हमें आज भी प्रसंगिक एवं यथार्थवादी लगते हैं। इसके बारें में आदेश जी लिखते हैं -
मौलवी - शास्त्री,मुल्ला- पंडित, जब आपस में लड़ते थे
(संज्ञा संज्ञा संज्ञा संज्ञा क्रिया विशेषण सर्वनाम परसर्ग क्रिया क्रिया)
थे मर्म धर्म का भूल रहे, बिन बात सदैव झगड़ते थे
(क्रिया संज्ञा संज्ञा परसर्ग क्रिया क्रिया क्रिया विशेषण संज्ञा विशेषण क्रिया क्रिया)

दोनो का भेद मिटाने को हृदयों में प्रेम बढ़ाते को
(विशेषण परसर्ग संज्ञा क्रिया परसर्ग संज्ञा परसर्ग संज्ञा क्रिया परसर्ग)
सच का रहस्य बतलाते को , दुनिया में आये थे कबीर
(विशेषण परसर्ग संज्ञा क्रिया परसर्ग संज्ञा परसर्ग क्रिया क्रिया संज्ञा)
आदेश जी ने सीधे शब्दों तथा पदों के माध्यम से कबीर के विचारों को व्यक्त किया हैं। इन पंक्तियों कार्पोरा के माध्यम से वृक्षसलग्न प्रणाली द्वारा विश्लेषण करने पर उनका विश्लेषण निम्न प्रकार हो जाता है।
संज्ञा के रूप में मौलवी ,शास्त्री, मुल्ला, पंडित, मर्म, धर्म, बात, भेद, हृदय, प्रेम, रहस्य, दुनिया, कबीर ने शब्दों का प्रयोग किया है।
सर्वनाम के रूप में आपस शब्द का प्रयोग कियाहै।
विशेषण के तौर पर सदैव, दोनों, सच, शब्दोंको,
क्रि. वि.के रूप में जब, बिन, शब्द आये है,
क्रिया के रूप में लड़ते , थे, भूल, रहे, झगड़ते, मिटाने, बढ़ाने, बतलाने, आये, थे शब्दों का प्रयोग
परसर्ग के रूप में में , का, को, विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग किया है।
इस प्रकार के विश्लेषण से जो डाटा तैयार होता है उससे हमारे सामने भाषा के ,शब्दों के व्याकरणिक रूप सामने आते हैंतथा साहित्यकार की रचना पद्धति भी समझती है।
आदेशजी अपनी अगली पंक्तियो में कबीर के ज्ञान का महत्व व्यक्त करते हैं। जिसने एक भी अक्षरपढ़ा- लिखा नहीं है ऐसा व्यक्ति समाज के सामने वेद, उपनिषद जैसे श्रेष्ठ ग्रन्थों को सीधे - साधे शब्दों में रखकर भारतीय संस्कृति में मानवता का होने वाला महत्व बताते हैं इससे प्रेरित होकर आदेशजी कबीर के पृथ्वी पर आने का उद्देश बताते हैं कि -
मानवता का आदेश दिया , पाखण्ड खण्ड कर दिखलाया
(संज्ञा परसर्ग संज्ञा संज्ञा संज्ञा संज्ञा क्रिया क्रिया)
सीधे-सीधे से शब्दों में , वेदान्त उपनिषद समझाया
(विशेषण परसर्ग संज्ञा परसर्ग संज्ञा संज्ञा क्रिया)
हर मुश्किल सरल बनाने को , सबको ही हृदय लगाने को
(विशेषण विशेषण विशेषण क्रिया परसर्ग सर्वनाम परसर्ग संज्ञा क्रिया परसर्ग)
मृदु गीत ज्ञान के गाने को , दुनिया में आये थे कबीर
(विशेषण संज्ञा संज्ञा परसर्ग क्रिया परसर्ग संज्ञा परसर्ग क्रिया क्रिया संज्ञा)
इन पंक्तियों का संगणकसाधित भाषिकी अध्ययन करने पर व्याकरणिक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। उसमें पदों का रचनात्मक विश्लेषण निम्न प्रकार हो जाता है।
संज्ञा के रूप में - मानवता आदेश , पाखण्ड, खण्ड, शब्दों, वेदान्त, उपनिषद, हृदय, गीत,ज्ञान, दुनिया, कबीर शब्दो का प्रयोग किया हैं।
सर्वनाम के रूप में - सबको , शब्दों का प्रयोग किया है।
विशेषण के रूप में - सीधे -साधे, हर,मुश्किल, सरल, मृदु, शब्दों का प्रयोग किया है।
क्रिया के रूप में दिया, कर, दिखलाया, समझाया, बनाने, लगाने, गाने, आये, थे, शब्दों का प्रयोग
परसर्ग के रूप में - का , से, में, को, ही, के, शब्दों का प्रयोग किया है।

निष्कर्ष

हम कह सकते है कि कविता के संगणकसाधित/ अभिकलनात्मक अध्ययन एवं विश्लेषण से कवि

के शब्द भंडार का ज्ञान हमें होता है। उसी प्रकार कवि की भाषा शैली, लयबद्ध रचना शैली, गेयता आदि बातें स्पष्ट होती हैं। कविता का अध्ययन सिर्फ कथ्य की दृष्टि से न करते हुए उनका व्याकरणिक रूप देखें तो कवि की भाषा , शब्द सामर्थ्य व्याकरणिक पदबंध उसमें संज्ञा , सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि का ज्ञान होता है। कविता का व्याकरणिक दृष्टि से अध्ययन भाषा विज्ञान के अंतर्गत आता है वह काम बहुत ही कठिन होता है। परंतु आज वहीं काम संगणक के माध्यम से करना आसान हो गया है। अत:: किसी भी साहित्यिक कृति का अध्ययन अभिकलनात्मक भाषा विज्ञान शाखा के अंतर्गत करने से साहित्यकार की रचना का शब्द निर्माण से पद रचना तक का अध्ययन किया जाता है। आज संगणक क्षेत्र में विविध सॉफ्टवेअर के माध्यम से डाटाबेस तैयार करके भाषा का अध्ययन करना आसान हो गया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1.प्रो. हरिशंकरआदेश, लहू और सिंदूर , (जीवन ज्योति प्रकाशन, ट्रिनिदाद) जनवरी 2001 पृष्ठ 47

2. Wingorad Terry, Understanding Natural Language:Edinburgh University press, 1973

3. भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान, किताब महल एजंसीज, इलाहाबाद, सं. 2000 ई.